

उ मराठी भाषींनी देशों को अनावृत्त वीथण 'मोट' जमीन के नाम के लिए
लोचिनाम के राजा सिंगपूर II ने 1876 ई. में ब्रिटीश सरकार के साथ एक
समझौता किया जो कि अंग्रेजी संस्था की स्थापना में ब्रिटीश देशों के साथ भाषी विवादों का शांतिपूर्ण
रास्ता है।

- फ्रांसीसी ने जाँको की समस्या तथा अन्य विवादों के निपटारे के लिए माँग की। यह नवंबर १८०५ ई. से जून १८१४ ई. तक चला। इसमें धोपी में सभी यूरोपीय राज्यों को अपना भाँटा नहीं पारिवहन की व्यवस्था के सुचारु सम्मेलन संचालन के लिए एक भाँटा की स्थापना हुई।
- वार्सिन सम्मेलन में भूमी का क्षेत्राधिकार व औद्योगिक विकास को ध्यान में रखा गया था, लेकिन यूरोपीय राज्यों ने भूमिका को अपना नहीं माना क्योंकि वे कई भूभागों पर दावा करते थे जो एकता नहीं थी।

विभिन्न यूरोपीय देशों के भूक्षेत्रों में वितरण

श्रौत \Rightarrow अल्पीत्या, मोल्का, धूमिल, भाइवी नाल भादि
इत्थेण \Rightarrow मिल भवति

इलेक्ट्रॉन → मिल, धुन, दहीन भल्लीन, रंटीशिया केमा, नाइजीलीया

અમંતી = ઔષધન, દોષાદિક, પુણ્ય, ગાલકોટ

कुल्लुवाल = कुल्लुवाल, पूवी मोजाविक